Dr. Bipin Kumar
Prof. Dept. of Economics
R. R. S. College, Mokama (Patna)
P.P.U. Patna

17.08.2020 B.A. Part-III P. 3

Economics (Hons.), Paper-I

Foreign capital.

प्रश्न : अल्पविकसित देशों में विदेशी पूँजी की आवश्यकता (Need of foreign capital in under developed economy) [illegible]

इसलिए विकासशील देशों में विदेशी पूँजी निर्धनता का कुचक्र तोड़ने (vicious circle of poverty) [illegible] करने या समाप्त करने में सहायक साबित होती है।

(4) निर्धनता का कुचक्र तोड़ने में सहायक (To Break the vicious circle of Poverty) : विकासशील देशों में निर्धनता के कुचक्र को तोड़ने और बाजार अपूर्णताओं को समाप्त करने के लिए विदेशी पूँजी काफी लाभप्रद होती है। Prof. Nurkse के अनुसार, "विदेशी साधनों का प्रयोग, निर्धनता के कुचक्र और निम्न पूँजी निर्माण को तोड़ने का एक मार्ग है। विदेशी पूँजी एवं अन्य साधनों का आगमन उत्पादन में तीव्र वृद्धि करेगा, जिससे बढ़ती हुई जनसंख्या का निर्वाह हो सकेगा। अतः संचयी विस्तार की प्रक्रिया प्रारंभ हो सकेगी और विदेशी विनिमय में इस पूँजी का पर्याप्त भाग होगा जिससे आवश्यक खाद्य पदार्थों के अतिरिक्त विकास के लिए आवश्यक कच्चे माल और अन्य साज-सामान का आयात किया जा सके।"

(5) पूँजी-निर्माण की तीव्र दर (Rapid Rate of capital formation) : अल्प-विकसित देशों का पूँजी निर्माण का दर धीमा होता है, परन्तु विदेशी पूँजी की सहायता से पूँजी-निर्माण की दर को सरलतापूर्वक एवं त्वरित निम्नस्तर [illegible] सकता है क्योंकि आयात की गई पूँजी को पूँजी-गहन भारी उद्योगों में लगाया जा सकता है जैसे, मशीनरी, इस्पात और उर्वरक आदि।

(6) विकास में सहायक (Helpful in the development of Economic and Social overheads) : यह सच है कि अल्प-विकसित देशों को पास विकास के लिए आवश्यक ढांचा का अभाव होता है जैसे, रेल, सड़कें, नहरें, विद्युत परियोजनाएँ और अन्य सामाजिक एवं आर्थिक ढांचे इत्यादि। कारण कि उनके विकास के लिए भारी पूँजी विनियोग और लंबे उत्पादन की आवश्यकता होती है। कमजोर पूँजी वाले देश प्रायः [illegible] साधनों की सहायता से इन भारी परियोजनाओं को प्रारंभ करने में असमर्थ होते हैं। अतः विदेशी पूँजी आर्थिक विकास की गति तीव्र करने में काफी मददगार होती है। ऐसे कमजोर पूँजी वाले देशों में तीव्र आर्थिक विकास की नींव रखने में सहायता करती है।

(7) जोखिमपूर्ण परियोजनाओं का समुचित उपयोग (Proper use of Risk Projects) : पिछड़े और विकासशील देशों में प्रायः विदेशी पूँजी नये उद्यम और व्यापारिक गतिविधि को प्रेरित [illegible] को खोलकर [illegible] करती है। यह जोखिमों वाले पथ-प्रदर्शक उद्यमों में प्रवेश करती है। अतः विदेशी पूँजी के विनियोग के फलस्वरूप अगम्य क्षेत्रों तक पहुँच पाती है और अप्रयुक्त प्राकृतिक साधनों का प्रयोग प्रारंभ करता है। यह देश में आर्थिक विकास की गति बढ़ाने में काफी सहायक होता है।

(8) प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग (Proper use of Natural Resources): [illegible] अल्पविकसित एवं पिछड़े हुए देशों में पूंजी की कमी रह गयी या चली जाती है तो विदेशी पूंजी उपयुक्त प्राकृतिक संसाधनों को काम में लाने में जो विभिन्न प्रकार से सहायक होती है और राष्ट्रीय योजनाओं को देश में पूरा करने में काफी मददगार साबित होती है।

(9) विदेशी पूंजी उत्पादन-स्तर बनाए रखने में सहायक होती है (Foreign capital Helps to maintain Production level): विदेशी पूंजी के आयात का एक महत्व यह भी है कि यह अल्पविकसित देशों में औद्योगिक उत्पादन के स्तर को बनाये रखने में बहुत सहायक होती है। यह आवश्यक कच्चा माल, मशीनें, अर्द्धनिर्मित वस्तुएँ, उपकरण और साज-सामान उपलब्ध कराकर अल्पविकसित देशों की सहायता करती है। अतः ऐसे देशों के उत्पादन-स्तर को बनाये रखने में विदेशी पूंजी या ऋण का सहारा आवश्यक हो जाता है।

अब हम विदेशी पूंजी की कुछ बड़ी खामियाँ, दोष या खतरों की चर्चा करेंगे। विदेशी पूंजी अपने उपरोक्त गुणों के बावजूद खतरों एवं अवगुणों से मुक्त नहीं है। निश्चित रूप से, यह अल्पविकसित एवं विकासशील देशों के लिए आयात पूर्णतः वरदान नहीं होता है। इससे विभिन्न प्रकार के खतरों एवं आशंकाएँ (Dangers) बनी रहती हैं जिनकी चर्चा क्रमशः बिन्दुवार रूप से नीचे की गयी है:

(1) बाहरी देशों पर निर्भर (Dependent on Foreign capital): विदेशी पूंजी की एक प्रमुख आक्षेप यह है कि यह देश विकसित या आयातक देशों पर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आश्रित हो जाता है। ऐसी निर्भरता इन देशों की आर्थिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए घातक साबित हो सकती है। इनको राजनीतिक डोर प्रायः विदेशी ऋणों के साथ जुड़ी रहती है जो विकासशील देशों को किसी न किसी शक्ति गुट से जुड़ने के लिए विवश कर रही है।

इसके अतिरिक्त, ऋणदाता देश की ओर से बड़े स्तर पर विदेशी पूंजी का स्थानान्तरण उसको ऋण प्राप्तकर्ता पर आर्थिक और राजनीतिक दबाव बढ़ा रहता है। ऐसी स्थिति में ऋण प्राप्तकर्ता देश के लिए स्वतंत्र एवं तटस्थ भूमिका अदा करना जटिल साबित होता है।

(2) संकटकाल में न्याय संगत नहीं (Not suitable during Emergency): ऐसा देखा गया है कि आयात की गयी पूंजी अल्पविकसित देशों के सामान्य हितों के लिए विशेषकर राष्ट्रीय संकट अथवा युद्ध के दौरान अनुचित प्रभावहीन साबित हो सकती है। यह ऐसी स्थिति में संभव है जब आधारभूत और मुख्य उद्योगों पर विदेशियों का एकाधिकार रहता है।

(3) प्राकृतिक संसाधनों का स्वार्थी साधनों हेतु दोहन (Exploitation of Natural Resources for Selfish Ends): विश्व में ऐसे बहुत सारे उदाहरण ऐसे मौजूद हैं। हाल में चीन के द्वारा श्रीलंका को काफी ऊँचे ब्याज दर वाला लंबे समय वापसी की सुविधा वाला बड़ा कर्ज देकर चीन ने श्रीलंका की .... बन्दरगाह अपने प्रयोग हेतु 99 वर्षों के लिए (लीज पर) ले लिया। ऐसे शोषण के ऐसे उदाहरण भरे पड़े [illegible] विकासशील देशों का इस प्रकार, विदेशी पूंजी का शोषण-पूर्ण प्रयोग एक कड़वा सच या कड़वा घूंट के समान हो। प्रो. नर्क्से ने इस सम्बन्ध में ठीक ही कहा है कि 'अल्पविकसित देशों में विदेशी देशों पूंजी का प्रयोग कर्षण उद्योगों में किया गया है और मुख्यतः उन्नत औद्योगिक देशों को तरफ निर्यात हेतु कार्य करते हैं, अल्प-विकसित या पिछड़े देशों का, विदेशी निवेशों के बावजूद पिछड़ा कृषि देशों में बहुत कम विकास हुआ।

(4) संभावित घरेलू निवेश का कम कार्यक्षेत्र (Less Scope for Potential Domestic Investment): देश में विदेशी पूंजी की सहायता से देश में उपलब्ध अति लाभप्रद निवेश अवसरों का उपभोग करके घरेलू निवेश के कार्यक्षेत्र को संकीर्ण कर सकती है। यह अति सन्देहपूर्ण है कि यदि विदेशी पूंजी का मौलिक एवं भारी उद्योगों के विकास तक ही सीमित रखा जाता है तो यह अर्थव्यवस्था में प्रभुत्व की भूमिका अदा कर रहा है तथा देश की आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियों में हस्तक्षेप कर सकती है, कभी-कभी तो विदेशी पूंजी का यह उतार-चढ़ाव करके बाजार [illegible] बन जाती है जो देश के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

(5) घरेलू ऋणों की तुलना में भारी बोझ (Heavier Burden As compared to Domestic Loans): विदेशी पूंजी की एक सबसे बुरी भूमिका होती है कि इसका बोझ घरेलू ऋणों से भी अधिक होती है। इसके अतिरिक्त, विदेशी पूंजी की वापसी के लिए ऋण प्राप्तकर्ता के द्वारा ऋणदाता को दुर्लभ विदेशी मुद्रा के भुगतान हस्तान्तरित करने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में ऋणदाता देश अपना शिकंजा कसता जाता है कर्जदार देशों पर और ऋणदाता देश [margin: को बुरी तरह] कुछेक में ऐसे देश असमर्थ हो जाते हैं और ऋण-ब्याज अदा [illegible] में पिछड़े देशों का ब्याज या कर्ज अदा करने हेतु कर्ज लेना पड़ता है तथा ऐसे देश 'ऋण के दुष्चक्र' में फँसकर (कराहता रहता) रह जाता है।

(6) यह दीर्घकालीन भुगतानों के संतुलन पर विपरीत प्रभाव डालता है (It Exercises Adverse Effect on Long Term Balance of Payments):